गांधी युग

- महात्मा गांधी का जन्म **2 अक्टूबर, 1869 ई०** को **गुजरात के पोरबंदर में** हुआ।
- इनका पूरा नाम **मोहन दास करमचंद्र गांधी** था जबकि प्यार से इन्हें लोग **भाई** कहते थे।
- इनके पिता **कमरचंद्र गाँधी** राजकोट शहर में दिवान थे। इनकी माता **पुतलीबाई** थी।
- 1883 ई० में 14 वर्ष की अवस्था में **कस्तुरबा गांधी** से इनका विवाह हो गया। इनके चार पुत्र थे- हरिलाल, मनिलाल, रामदास देवदास तथा यमुना लाल बजाज को इनका पांचवां (दत्तक) पुत्र कहा जाता है।
- 1888 ई० में ये अपनी उच्च शिक्षा के लिए लंदन चले गए और वहाँ वकालत की पढ़ाई (LLB) पूरी करके बैरिस्टर बने।
- 1891 में पढ़ाई पूरी कर भारत लौटे और बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की।
- एक गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का केश लड़ने के लिए 1893 में वो दक्षिण अफ्रीका चले गए। जहाँ उन्हें रंगभेद का सामना करना पड़ा।
- 1894 में वहीं रहकर समाजिक कार्य तथा वकालत करने का फैसला लिए और नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।
- दक्षिण अफ्रीका में नेटाल क्षेत्र के समीप डरबन में पिटरमार्टिन वर्ग स्टेशन पर इन्हें ट्रेन से निचे ढकेल दिया गया, क्योंकि प्रथम श्रेणी में भारतीयों और कुत्तों को जाना मना था।
- इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार को गांधीजी से माफी मांगनी पड़ी।
- दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने भारतीयों के लिए अपना पहला सत्याग्रह किया।
- 1901 ई० में महात्मा गांधी भारत के लिए रवाना हुए तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों को आश्वासन दिया कि वे जब भी आवश्यकता महसूस करेंगे वे वापस लौट आएंगे।
- 1902 ई० में भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर दक्षिण अफ्रीका पुनः वापस लौटे।
- 1903 ई० में जोहान्सबर्ग में वकालत का दफ्तर खोला।
- इन्होंने 1904 ई० में दक्षिण अफ्रीका में शिल्पकार कालेनवाख की मदद से फिनिक्स फर्म (Phenix form) की स्थापना किया।
- महात्मा गांधी ने Indian openion नामक सप्ताहिक पत्रिका लिखी जो कई भाषाओं में प्रकाशित हुई किन्तु इसका प्रकाशन उर्दू भाषा में नहीं हुआ।
- 1906 ई० में आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया।
- एशियाटिक आर्डिनेंस के विरुद्ध जोहान्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरम्भ किया।
- 1907 ई० में **'ब्लैक एक्ट'** भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों के जबरदस्ती पंजीकरण के विरुद्ध सत्याग्रह किया।
- 1908 ई० में सत्याग्रह के लिये जोहान्सबर्ग में प्रथम बार **कारावास दण्ड आंदोलन** जारी रहा तथा द्वितीय सत्याग्रह में पंजीकरण प्रमाणपत्र जलाए गए।
- 1908 ई० में पहली बार महात्मा गांधी को जेल हुआ।
- जून 1909 ई० में भारतीयों का पक्ष रखने इंग्लैण्ड रवाना हुए और नवम्बर में दक्षिण अफ्रीका से वापसी के समय जहाज में **'हिन्द-स्वराज' (पुस्तक)** लिखी।
- मई 1910 ई० में जोहान्सबर्ग के निकट **टॉलस्टॉय फार्म** की स्थापना किया जो वर्तमान में **गांधी आश्रम** के रूप में विख्यात है।
- 1913 ई० में रंगभेद तथा दमनकारी नितियों के विरूद्ध सत्याग्रह जारी रखा।
- महात्मा गांधी ने **'द ग्रेट मार्च'** का नेतृत्व किया। जिसमें 2000 भारतीय खदान कर्मियों ने न्यूकासल से नेटाल तक की पदयात्रा की।
- दक्षिण अफ्रीका में ही महात्मा गांधी ने **गोपालकृष्ण गोखले** को अपना राजनैतिक गुरु मान लिया।
- महात्मा गाँधी को आंदोलन की प्रेरणा रूस के विद्वान **लियो टॉल्स टॉय** से मिली। इन्हीं से महात्मा गांधी सर्वाधिक प्रभावित थे।
- महात्मा गांधी को भुख हड़ताल की प्रेरणा **जर्मन विद्वान रस्कीन** से मिली।
- महादेव देसाई महात्मा गाँधी के (सलाहकार) सचिव थे। अमेरिकी पत्रकार **मिलर** महात्मा गाँधी का सहयोगी था।

महात्मा गाँधी की उपाधियाँ

- अंग्रेजों ने गाँधी जी को **सारजेण्ट** की उपाधि दी, क्योंकि गाँधी जी ने प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना में बहुत से भारतीयों को भर्ती करवाया।
- अंग्रेजों का सहयोग करने के कारण महात्मा गाँधी को ब्रिटिश सरकार ने **कैसर-ए-हिन्द** की उपाधि दी।
- चम्पारण सत्याग्रह की सफलता के बाद रविन्द्रनाथ टैगोर ने **'महात्मा'** की उपाधि दी।
- जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें **'बापू'** की उपाधि दिया।
- सुभाष चंद्र बोस ने इन्हें **'राष्ट्रपिता'** की उपाधि दिया।
- विस्टन चर्चिल (PM of England) ने इन्हें **'अर्द्धनग्न फकीर'** कहा।

By - Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- शेख मुजिवुल रहमान ने इन्हें **'जादुगर'** की उपाधि दिया।
- खुदाई खिदमत गार संस्था ने **'मंगल बाबा'** की उपाधि दिया।
- आइंस्टीन ने कहा कि **''आने वाले 100, 200 साल के बाद शायद ही कोई विश्वास करें की ऐसे हाड़ मांस के शरीर वाला व्यक्ति इस पृथ्वी पर था''**, जिसने इतना बड़ा आंदोलन कर दिया।
- 9 Jan. 1915 ई० को महात्मा गांधी भारत लौट आए आज भी इस दिन को **प्रवासी भारतीय दिवस** के रूप में मनाया जाता है।
- उन्होंने अहमदाबाद के समीप कोचरब नामक स्थान पर 1915 ई० में ही एक आश्रम स्थापित किए। जो आगे चलकर **साबरमती आश्रम** के नाम से जाना जाने लगा।
- इस आश्रम के लिए धन अम्बालाल साराबाई ने दिया। इस आश्रम के अंदर महात्मा गांधी की कुटीया हृदय कुंज कहलाता था।
- 1916 ई० में महात्मा गांधी ने कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में भाग लिया इसकी अध्यक्षता अम्बिका चंद्र मजुमदार कर रहे थे।
- इसी अधिवेशन में राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चम्पारण के निल्हें जमिंदारों के **तीनकठिया पद्धति (3/20)** की जानकारी दिए और उन्हें चम्पारण आने का आग्रह किया।
- 1917 ई० में राजेन्द्र प्रसाद तथा अनुग्रह नारायण सिन्हा के साथ महात्मा गांधी चम्पारण पहुंचे और वहाँ सफल सत्याग्रह किए।
- अंग्रेजों ने तिनकठिया पद्धति समाप्त कर दी। यह आंदोलन निलहे जमींदारों के विरूद्ध था। यह भारत में महात्मा गांधी का पहला सफल आंदोलन था इसकी सफलता के बाद रविन्द्र नाथ टैगोर ने इन्हें महात्मा की उपाधि दिया।
- 1918 ई० में महात्मा गांधी ने खेड़ा सत्याग्रह किया और किसानों के बढ़े हुए टैक्स को माफ कराया।
- 1918 ई० में ही महात्मा गांधी ने अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह किया। इस सत्याग्रह में पहली बार महात्मा गांधी ने भुख हड़ताल का प्रयोग किया।

Remarks : महात्मा गांधी के आंदोलन के चार चरण थे–

(i) सत्याग्रह (ii) भुख हड़ताल
(iii) बहिष्कार (iv) हड़ताल

रौलेक्ट एक्ट (19 मार्च 1919)

- भारतीय क्रांति को दबाने के लिए सिडनी रोलेक्ट ने Anarchial and Revolutionary Act लाया। जिसके तहत शक के आधार पर पुलिस किसी को भी गिरफ्तार कर सकती है।
- 30 मार्च 1919 ई० को स्वामी श्रद्धानंद ने **''कर मत दो''** आंदोलन किया। जबकि ''कर मत दो'' का नारा **बल्लभ भाई पटेल** ने दिया है।
- 6 अप्रैल 1919 ई० को गाँधी जी द्वारा देशव्यापी हड़ताल किया गया। 8 अप्रैल 1919 ई० को गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया।
- इस सत्याग्रह का केन्द्र पंजाब था।
- इसे बिना दलील बिना अपील, बिना वकील का कानून कहा गया।
- गांधी जी ने इसे काला कानून कहा। इसी कानून के तहत पंजाब के दो नेता सैफुदीन किचलु तथा सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया।

जालीयांवाला बाग हत्याकांड (13 April 1919)

- रौलेक्ट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जालियांवाला बाग में लोग इकट्ठा हुए थे और जनसभा का शांतीपूर्ण संचालन कर रहे थे।
- इस समय भारत का वायसराय (गवर्नर) चेम्सफोर्ड था।
- पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर O डायर ने गोरखा रेजीमेंट के ब्रिगेडियर R डायर को जालियांवाला बाग भेजा। जहाँ R डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवा दी।
- आँकड़ों के अनुसार मरने वालों की संख्या 379 थी लेकिन वास्तव में इससे कहीं ज्यादा लोग मारे गए।
- हंस राज नामक भारतीय ने जालियावाला बाग की सूचना अंग्रेजों को दी थी।
- जालियांवाला बाग नरसंहार के कारण पूरे भारत में विरोध हुआ।
- गांधी जी ने **कैसर-ए-हिन्द** की उपाधि, रविन्द्र नाथ टैगोर ने **सर की उपाधि** त्याग दिया।
- डा० शंकर नायर ने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् से त्याग पत्र दे दिया।
- कांग्रेस ने इस घटना की जाँच के लिए मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक समिति बनाई। इस समिति ने कहा की यह जनरल डायर द्वारा जल्दबाजी में लिया गया मुर्खतापूर्ण कदम था।
- अंग्रेजों ने इसके जाँच के लिए हंटर कमिशन का गठन किया। इस आयोग में तीन भारतीय और पाँच अंग्रेज सदस्य थे। इस कमीशन में जनरल डायर को सही ठहराया। जनरल O डायर को लंदन में सम्मान के रूप में तलवार और 2600 पौंड की धनराशि दिया गया।
- 1940 में अधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल O डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।

होमरूल आंदोलन (1916)

- यह आयरलैण्ड से प्रेरित था इसकी शुरुआत दो चरणों में हुई पहला चरण बाल गंगाधर तिलक ने April 1916 में महाराष्ट्र से प्रारंभ किया।
- इसी आंदोलन के दौरान उन्होंने कहा कि **''स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहुंगा।''**
- वैलेटाइन सिरोल ने तिलक जी को 'भारतीय अशांती का जनक' (Indian Arnest) कहा था। जिस कारण ये उसपर केश करने लंदन चले गए और 1918 ई० में होमरूल का पहला चरण समाप्त हो गया।

Remarks : बालगंगाधर तिलक को लोकमान्य कहा जाता है। इनकी अर्थी को महात्मा गांधी तथा शौकत अली ने कंधा दिया।

By - Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- होमरूल का दूसरा चरण सितम्बर, 1916 ई० में **एनी बेसेंट** ने प्रारंभ किया।
- इनका होमरूल आंदोलन पूरे भारत में फैल गया। किन्तु अंग्रेजों ने एनी बेसेंट को गिरफ्तार कर लिया और जब 1918 ई० में उन्हें छोड़ा तो होमरूल आंदोलन पूरी तरह समाप्त हो चुका था। होमरूल का उद्देश्य प्रांतीय स्वायत्ता (राज्यों का स्वशासन) थी।

खिलाफत आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों ने मुसलमानों से यह वादा किए थे कि वे तुर्की का विभाजन नहीं करेंगे किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों ने तुर्की का विभाजन कर दिया। उसे आपस में बांट दिया। इसका विरोध तुर्की के खलीफा ने किया।
- भारत में इसी विभाजन के विरोध में खिलाफत आंदोलन प्रारंभ किया गया।
- खिलाफत आंदोलन को **मोहम्मद अल्ली तथा सौकत अली** ने शुरू किया था।
- अखिल भारतीय खिलाफत की बैठक दिल्ली के फिरोज साह कोटला मैदान में हुई।
- 23 Nov. 1919 ई० को इसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने कर दिया।
- अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर अंग्रेजों ने तुर्की के विभाजन को रद्द कर दिया और भारत में भी खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया। महात्मा गांधी को मुसलमानों का भी सहयोग प्राप्त हो गया।

असहयोग आंदोलन (1 Aug. 1920)

- यह महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया पहला जन आंदोलन था, क्योंकि इसमें पूरे देश की जनता ने भाग लिया था।
- महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि हमसब मिलकर अहिंसक रूप से अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करें तो निश्चित ही एक वर्ष में आजादी मिल जाएगी।
- महात्मा गांधी के कहने पर ही वकीलों ने न्यायालय जाना छोड़ दिया।
- विद्यार्थीयों ने अंग्रेजों का स्कूल छोड़ दिया। नाई, धोबी, मोची, बावर्ची ने अंग्रेजों का काम करने से मना कर दिया। लोग अंग्रेजों के वस्तुओं को खरीदना छोड़ दिए और दुकानदार उसे बेचना छोड़ दिए।
- इससे अंग्रेजों को भारी नुकसान हुआ। किन्तु यह आंदोलन आजादी नहीं दिला सकता था।
- दक्षिण भारत से असहयोग आंदोलन गोपालाचारी ने किया। इसी आंदोलन के दौरान मौलाना मजहरूल हक ने पटना में **सदाकत आश्रम** की स्थापना की।
- C.R. दास तथा मोतीलाल नेहरू ने प्रारंभ में इस आंदोलन का विरोध किया किन्तु बाद में वे भी इस आंदोलन से जुड़ गए।
- इस आंदोलन में जेल जानेवाले पहले पुरुष C.R. दास थे तथा पहली महिला वसंती देवी थी।
- 5 फरवरी, 1922 ई० को गोरखपुर के चौड़ी-चौड़ा में भीड़ ने 22 पुलिस वालो को जिंदा जला दिया।
- इस घटना के समय महात्मा गांधी गुजरात में थे। इन्होंने इस हिंसा से आहत होकर 12 फरवरी, 1922 ई० को यह आंदोलन स्थगित कर दिया।
- महात्मा गांधी के इस कदम का पूरे भारत में विरोध हुआ।
- जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि **"यदि कश्मीर किसी गांव हिंसा हुआ है तो उसकी सजा कन्याकुमारी के किसी गांव को क्यों दी जाए।"**
- सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि **"जब जनता का उत्साह अपने चरम पर था तो गांधी जी द्वारा आंदोलन स्थगित करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय था।"** 10 मार्च, 1922 को जनता को भड़काने के आरोप में गांधी जी को 6 वर्ष जेल की सजा हुई।
- 1924 ई० में गांधीजी को खराब स्वास्थ के कारण जेल से रिहा कर दिया गया।
- 1924 ई० में गांधीजी ने बेलग्राम कांग्रेस अधिवेशन (केरल) की अध्यक्षता की।

स्वराज दल

- 1922 ई० में कांग्रेस के गया अधिवेशन में **स्वराज पार्टी** का गठन की चर्चा हुई।
- 1 जनवरी, 1923 ई० को स्वराज पार्टी का गठन **इलाहाबाद** में हो गया। इसके पहले अध्यक्ष **C.R. Das तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू** बने, जो इस पार्टी के संस्थापक थे।
- इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य था केन्द्रीय विधान सभा (संसद) में घुसकर सरकारी काम में बाधा डालना। इसके लिए इन्होंने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया और जनता से यह वादा किया कि वे कोई भी सरकारी पद नहीं लेंगे।
- केन्द्रिय विधान सभा के 100 सिरों में स्वराज दल को 42 सिटें प्राप्त हुई जिस कारण 1923 ई० के चुनाव में स्वराज पार्टी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी बनी।
  - (i) सरकारी काम में बाधा डालना
  - (ii) राज्यों की स्वायत्तता (स्वतंत्रता)
  - (iii) डोमेनियन स्टेट
- स्वराज दल ने **ली कमीशन** की रिपोर्ट नहीं लागू होने दिया जो जाति की उच्चता को बरकरार रखने की बात कर रहा था।
- स्वराज दल ने **मुडीमैन कमीशन** का भी रिपोर्ट पारित नहीं होने दिया जो राज्यों में स्वतंत्रता न लाकर द्वैध शासन की बात कर रहा था।
- **विट्ठल भाई** विधान सभा के पहले भारतीय अध्यक्ष बनें ये स्वराज दल के थे।
- मोतीलाल नेहरू ने भी सरकारी पद ले लिया जिस कारण जनता का विश्वास इस पार्टी से उठने लगा और 1928 ई० आते-आते यह पार्टी समाप्त हो गई।

By - Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- **बलसाड सत्याग्रह (1924) :–** यह गुजरात के बलसाड़ से डकैती कर (TAX) के विरुद्ध प्रारंभ हुआ।
- अंग्रेजों को डकैती कर (TAX) रद्द करना पड़ा। इसका नेतृत्व बल्लभ भाई पटेल ने किया।
- **वायकोण सत्याग्रह (1924–25) :** यह केरल के मालवाड़ तट से प्रारंभ हुआ। इजवा जनजाति के लोगों को मंदिर के आगे के रास्ते पर जाने से रोका गया था जिसके विरूद्ध T.K. माधवन ने यह आंदोलन प्रारंभ किया। यह आंदोलन सफल रहा।

साइमन कमीशन

- 1919 के भारत शासन अधिनियम में कहा गया था कि अधिनियम पारित होने के दस वर्ष बाद एक संवैधानिक आयोग की नियुक्ति की जाएगी, जो यह जाँच करेगी कि भारत उत्तरदायी शासन की दिशा में कहाँ तक प्रगति करने की स्थिति में है।
- आयोग की नियुक्ति तो 10 वर्ष के बाद की जानी चाहिए थी, लेकिन ब्रिटेन की तत्कालीन कंजरवेटिव सरकार ने दो वर्ष पूर्व ही साइमन कमीशन की नियुक्ति (8 नवम्बर, 1927) कर दी, क्योंकि उसे आशंका थी कि दो वर्ष बाद लेबर पार्टी की सरकार भारत समर्थक सदस्यों वाले वैधानिक आयोग की नियुक्ति कर सकती है किन्तु भारतीयों में आपसी मतभेद बहुत अधिक था। जिस कारण भारत के राज्य सचिव वरकेन हेड ने 1927 ई० को साइमन कमीशन का गठन करवाया।
- इस 7 सदस्यों वाले आयोग के सभी अंग्रेज सदस्य थे, इसके अध्यक्ष साइमन थे।
- क्लीमेंट एटली भी इसके सदस्य थे जो आगे जाकर ब्रिटेन के PM बने।
- साइमन कमीशन 1919 ई० की अधिनियम की जाँच करने आया था। इसका मूल नाम Indian Statuery Commission (भारतीय वैधानिक आयोग) था।
- फरवरी, 1928 ई० को जब साइमन कमीशन भारत पहुंचा तो उसका अत्यधिक विरोध हुआ। इसी विरोध प्रदर्शन में पंजाब में लाला लाजपत राय के ऊपर सांर्डस के नेतृत्व में पुलिस लाठी चार्ज हो गई जिसमें चोट लगने से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई।
- लाला लाजपत राय ने कहा कि **''मेरे पीठ पर परी एक-एक लाठी अंग्रेजों के ताबूत की आखिरी कील साबित होगी''**।
- सार्डस की हत्या का आरोप लगाकर भगत सिंह को फाँसी दे दिया गया। समस्त भारत ने इस आयोग का विरोध किया और इसे श्वेत कमीशन कहा।
- दक्षिण भारत कि जस्टिस पार्टी तथा युअनिष्ट पार्टी ने इसका समर्थन किया। विरोध के बावजूद साइमन कमिशन ने 1930 ई० में अपनी रिपोर्ट दे दी।
- साइमन कमिशन के रिपोर्ट के आधार पर ही भारत शासन अधिनियम 1935 पारित हुआ।
- इस अधिनियम के द्वारा म्यामांर (वर्मा) को भारत से अलग कर दिया गया। इसी अधिनियम के द्वारा पहली बार भारत में प्रांतिय चुनाव 1937 में करा दिया गया। इस चुनाव में कांग्रेस को बड़ी जीत हासिल हुई।
- 8 राज्यों में कांग्रेस की सरकार बन गई। पंजाब तथा सिंध में मुस्लिम लीग की सरकार बनी।
- **नेहरू निर्पार्ट (1928) –** साइमन कमिशन के विरोध के कारण भारत के राज्य सचिव वारकेन हेड ने भारतीयों को यह चुनौती दी **''यदि सर्व सहमती से वह अपना कानून बना लेंगे तो मैं उसे ब्रिटेन में पारित करा दुंगा''**।
- इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मोतीलाल नेहरू ने नेहरू रिर्पोट तैयार किया जिसका मुख्य उद्देश्य Domenian State (स्वायत राज्य) की स्थापना करना था किन्तु मुस्लिम लीग ने इसे स्वीकार नहीं कि जिस कारण नेहरू रिपोर्ट पारित नहीं हो सका।
- **14 सत्री जिन्ना फार्मुला –** नेहरू रिपोर्ट के प्रति उत्तर में जिन्ना ने 14 सुत्री जिन्ना फॉर्मुला दिया अंग्रेजों ने इसे भी स्वीकार नहीं किया।
- **लाहौर अधिवेशन (1929)** – इसकी अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू ने किया। इसमें **पूर्ण स्वराज** का प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही यह निर्णय लिया गया कि हर 26 जनवरी को **स्वाधिनता दिवस** मनाया जाएगा।
- इसी कारण 26 नवम्बर, 1949 ई० को संविधान बनने के बावजुद इसे 26 जनवरी, 1950 ई० को लागू किया गया।
- इसी अधिवेशन में लाहौर में रावी नदी के तट पर मध्य रात्री को जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा लहराया और कहा- **''मध्यरात्री पर जब पूरी दुनिया सो रही है भारत अपनी स्वतंत्रता की नींव रख रहा है''**।

दाण्डी मार्च

- गाँधीजी ने इरविन को अपनी 11 सूत्री माँग सौंप दी किन्तु इरविन ने उसे अस्वीकार कर दिया। जिस कारण महात्मा गाँधी ने 12 मार्च 1930 ई० को साबरमती आश्रम से अपने 78 (80) SC (अनुसूचित जाति) के सहयोगियों के साथ **नामक कानून** तोड़ने के लिए **दांडी** की ओर चल दिए।
- उनके साथ **सरोजनी नायडू** भी थी। 240 mile (240 × 1.52 = 385 km) की यात्रा को 24 दिन में पूरा किया गया। 6 अप्रैल 1930 ई० को दाण्डी यात्रा पूरी हुई और गाँधीजी ने दाण्डी में आसवन विधि द्वारा नमक बनाया।
- इसी के साथ महात्मा गांधी ने **सविनय अवज्ञा आंदोलन** प्रारंभ किया।

By - Khan Sir (खानसर विशेषज्ञ)

सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobidance Movement) - 1930

- दांडी यात्रा की सफलता को देखते हुए गाँधीजी ने इस आंदोलन को प्रारंभ किया।
- कश्मिर के क्षेत्र से **खान अब्दुल गफ्फार खान** ने **खुदाई खिदमतगार संस्था** का गठन किया। इन्होंने लाल कुरती सेना का गठन किया इन्हें सीमांत गांधी भी कहा जाता है।
- छपरा के कैदियों ने **नंगा विद्रोह** कर दिया क्योंकि वे स्वदेशी वस्त्रों की मांग कर रहे थे।
- दक्षिण भारत में इसका नेतृत्व **चक्रवर्ती राजगोपालाचारी** ने किया।
- मुम्बई में इसी आंदोलन के दौरान सरोजनी नायडू ने 25000 आंदोलनकारियों को लेकर धरसना नामक (गुजरात) के स्थान पर पहुंची किन्तु इसकी सूचना पहले ही अंग्रेजों को लग गई और अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबा दिया।
- इसी आंदोलन के दौरान लड़कों की बांदरी सेना तथा लड़कियों की मंजरी सेना का गठन किया गया।
- यह आंदोलन आंशिक रूप से सफल रहा क्योंकि इसी आंदोलन के कारण अंग्रेजों ने Tax में कटौती किया तथा मादक पदार्थ जैसे- सिगरेट तथा शराब के उत्पादन में कमी किया।
- जब सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था तो लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था क्योंकि भारत के इस आंदोलन के कारण कोई कांग्रेस का प्रतिनिधि वहाँ भाग लेने नहीं गया। जिस कारण इंग्लैण्ड से इरविन पर दबाव आने लगा कि वे कांग्रेस को इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए भेजे।
- इसी दबाव में आकर इरविन ने समझौता करने का विचार किया।
- इरविन ने महात्मा गांधी से यह आग्रह किया गया कि यदि वे सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगीत करके गोलमेज सम्मेलन में भाग लेंगे तो गांधीजी के कुछ बातों को मान लिया जाएगा जिससे सबसे प्रमुख राजनीतिक कैदियों की रिहाई थी। इस समझौता के तहत भगत सिंह को नहीं रिहा किया गया क्योंकि उनपर अपराधिक मुकदमा था।
- **गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली पैक्ट)–** 5 मार्च, 1931 ई० को दिल्ली में एक समझौता हुआ, इस समझौते को गाँधी-इरविन समझौता कहा जाता है।

  Note : सरोजनी नायडू ने गांधी तथा इरविन को **दो महात्मा** कहा। इस समझौते के तहत 7 Sep. 1931 ई० को महात्मा गाँधी S.S. Rajputana नामक पानी वाला जहाज से लंदन पहुंचे। जहाँ विस्टन चर्चिल ने उन्हें **अर्द्धनग्न फकीर** कहा। इस सम्मेलन में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रैमजे मैकाडोनल ने दलितों के लिए अलग क्षेत्र अर्थात् समप्रदायिक पंचांग (Communal Award) की बात कही। जिस कारण महात्मा गांधी सम्मेलन को छोड़कर भारत लौट आए और पुन: सविनय अवज्ञा आंदोलन को आगे बढ़ाया। महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके पूना के यरवदा जेल में कैद कर दिया गया।

गोलमेज सम्मेलन (1930-1932)

- भारतीय प्रशासन पर चर्चा करने के लिए लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- **प्रथम गोलमेल सम्मेलन (12 Nov. 1930 - 19 Jan. 1931)** — इस सम्मेलन में कांग्रेस का कोई प्रतिनिधि भाग नहीं किया क्योंकि की महात्मा गांधी सविनय अवज्ञा आंदोलन कर रहे थे।
- **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन - (7 Sep 1931)**- इस सम्मेलन में महात्मा गाँधी ने भाग लिया किन्तु ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनल ने सम्प्रदायिक पंचांग की बात कही जिस कारण गांधी जी सम्मेलन छोड़कर चले आए।
- **तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 Nov. 1932 - 24 Dec. 1932) –** इस सम्मेलन में कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। इसी सम्मेलन में मैकडोनल ने दलीतों के लिए पृथक क्षेत्र (साम्प्रदायिक पंचांग की घोषणा कर दी।

  Note : तेज बहादूर शफरू तथा भीमराव अम्बेदकर तीनों ही गोलमेज सम्मेलन में भाग लिए थे।
- **पूना समझौता (24 Sep 1932) –** जैसे ही सम्प्रदायिक पंचांग की घोषाण हुई और दलितों को आरक्षण सहित पृथक क्षेत्र दिया गया।
- महात्मा गांधी ने पूना के यरवदा जेल में अनशन कर दिया। तेज बहादुर शफरू तथा मदनमोहन मालवीय के सहयोग से गांधी एवं अम्बेकर के बीच समझौता हुआ। जिसे पूना Pact कहते है इसके तहत दलितों के आरक्षीत सीट को 71 से बढ़ाकर 148 कर (Tax) दी गई अर्थात् दलीतों को आरक्षण सहित संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र दिया गया।

हरिजन सेवक संघ

- महात्मा गांधी ने दलितों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उन्हें हरिजन नाम दिया। 1932 में अखिल भारतीय अस्पृश्यता संघ (All Indian Untouchability League) की स्थापना किया जो आगे चलकर हरिजन सेवक संघ कहलाया।

मुस्लिम लीग

- इसकी स्थापना ढ़ाका में 1906 ई. में **आग खाँ एवं सलीमुल्लाखाँ** ने किया। इस समय वायसराय मिण्टो-II थे।
- 1909 ई० में मुस्लिम लीग की मांग पर मुसलमानों की पृथक निर्वाचन क्षेत्र मिल गया जिस कारण कांग्रेस तथा लिग में विवाद होने लगा।
- ऐनी वेसेंट तथा तिलक जी के सहयोग से 1916 ई० में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में नरम दल, गरमदल तथा मुस्लिम लीग एक हो गए तथा कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचन क्षेत्र को स्वीकार कर लिया।
- 1929-30 ई० के दौरान मो. इकबाल ने सर्वप्रथम द्वि-राष्ट्र की बात कही।
- **चौधरी रहमत अल्ली** ने पाकिस्तान शब्द दिया।

By - Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- 1937 के चुनाव के फलस्वरूप कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनी थी और वायसराय के परिषद में कांग्रेस का दबदबा था और मुस्लिम लीग की शक्तियां कमजोर होते दिख रही थी।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने बिना भारतीयों तथा कांग्रेस के अनुमति के ही यह घोषणा कर दी की 3 लाख भारतीय सैनिक इंग्लैण्ड की तरफ से लड़ेंगे जिस कारण कांग्रेस ने 22 Dec. 1939 को वायसराय के परिषद से त्याग पत्र दे दिया। इससे खुश होकर मुस्लिम लीग ने 22 Dec. 1939 को मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- 1940 में मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन हुआ। जिसकी अध्यक्षता जिन्ना ने किया। इन्होंने स्पष्ट रूप से पृथक पाकिस्तान की मांग कर दी।
- 1945 में लार्ड वेवेल ने भारत के विभिन्न पार्टियों को आपसी समन्वय तथा सहयोग बनाए रखने के लिए शिमला सम्मेलन बुलाया, किन्तु इस सम्मेलन में मुस्लिम लीग पूरी तरह पृथक पाकिस्तान कि माँग पर तुला हुआ था।
- इस सम्मेलन में मुस्लिम लीग की बात नहीं मानी गई और मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के मांग के कारण ही यह सम्मेलन विफल हो पाया।

प्रत्यक्ष कारवाई दिवस

- शिमला सम्मेलन की विफलता के बाद मुस्लिम लीग ने 16 Aug 1946 को प्रत्यक्ष कारवाई दिवस (Direct Action Plan) घोषित किया जिसके तहत पूरे भारत में साम्प्रदायिक दंगे फैलाये गए।
- सबसे बड़ा दंगा, बंगाल के नोआखली में हुआ। मुस्लिम लीग का नारा था- **''बांटो और आजाद करो''**।
- इन दंगों से तंग आकर कांग्रेस ने CR फॉमुर्ला के आधार पर विभाजन का समर्थन किया।
- लार्ड माऊंटबेटन को यह विशेष सलाह पर भारत भेजा गया की यथा संभव हो वे भारत को संयुक्त रखे किन्तु सम्प्रदायिक दंगों से तंग आकर माऊंटबेटन ने भी CR फॉर्मूला का ही समर्थन किया और बाल्कन Plan के तहत 14 Aug 1947 ई० को भारत का विभाजन कर दिया गया।
- मैकुअल रेडक्लिफ के नेतृत्व में भारत-पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ नामक विभाजन रेखा खिंच दी गई।
- **मोहम्मद अल्ली जिन्ना** को पाकिस्तान का निर्माता कहा जाता है।
- **लिआकत अल्ली** पहले प्रधानमंत्री बनें जो संयुक्त भारत के वित्तमंत्री थे।

सुभाषचन्द्र बोस

- सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 Jan 1897 ई० को उड़ीसा के कटक में हुआ था। इनके गुरु C.R. Das थे। इन्होंने 1920 ई० में इंडियन सिविल सर्विस (I.C.S.) की परीक्षा पास किन्तु 1921 ई० में उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और राजनीति में प्रवेश कर गए 1938 ई० में गुजरात के हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष बनें।
- 1939 ई० में (M.P.) के त्रिपुरी में महात्मा गांधी पताभीसिता रमईया को अध्यक्ष बनाना चाहते थे किन्तु इस अधिवेशन में मतदान द्वारा अध्यक्ष चुना गया और सुभाष चन्द्र बोस को अध्यक्ष चुना गया जिस कारण गांधी एवं बोस में मतभेद हो गया।
- कांग्रेस के इतिहासकार पताभीसिता रमईया थे।
- सुभाष चंद्र बोस मतभेद होने के कारण कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया और एक अलग पार्टी फार्वड ब्लैक की स्थापना 1939 ई० में किया।
- कांग्रेस के खाली पदों को राजेन्द्र प्रसाद ने भरा।
- 1940 ई० में भरकाऊ भाषण के कारण बोस को जेल हो गया। 1941 ई० में जेल से रिहा हो गए। ये जर्मनी में हीटलर से मिले।
- हिटलर ने इन्हें नेताजी की उपाधि दिया हिटलर जिन भारतीय सैनिकों को बंदी बनाया था सुभाष चन्द्र बोस ने इन्हें इंग्लैण्ड के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया।
- इन सैनिकों को हथियार और Tranning जापान ने दिया। साथ ही अण्डमान और निकोबार (A & N) सुभाषचन्द्र बोस को उपहार में दे दिया।
- अपने सैनिकों में जोश भरते हुए जुबली हॉल में यह कहा कि- **''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा''**।
- सुभाष चन्द्र बोस ने अंडमान निकोबार का नाम शहीद एवं स्वराज दिया।
- सिंगापुर में इन सैनिकों को आजाद हिन्द फौज का हिस्सा बना दिया गया और महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया गया।

आजाद हिन्द फौज

- इसके गठन का सर्वप्रथम विचार Indian Captain मोहन सिंह ने दिया अर्थात यह कैप्टन मोहन सिंह के दिमाग की उपज थी।
- आजाद हिन्द फौज के संस्थापक रासबिहारी बोस थे। 4 July 1943 को सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के कप्तान बने इन्हें इस फौज का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- 21 Oct 1943 को सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की।
- सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को लेकर मणीपुर पर आक्रमण किया और उस को अपने नियंत्रण में कर लिया।
- मणिपुर के इम्फाल से सुभाष चन्द्र बोस ने **''जय हिन्द, तथा दिल्ली चलो''** का नारा दिया।
- 6 Aug तथा 9 Aug 1945 ई० को अमेरिका ने जापान पर परमाणु हमला कर दिया जिस कारण सुभाष चन्द्र बोस ने जापान छोड़ दिया किन्तु 18 Aug 1945 को ताइबान (कामुसा) के समीप विमान दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई।
- जापान सरकार ने इनकी मृत्यु की घोषणा 22 Aug 1945 ई० को किया।
- इनकी मृत्यु के बाद आजाद हिन्द फौज की सैनिकों पर लाल किला में मुकदमा चलाया गया।
- इन सैनिकों की वकालत जवाहर लाल नेहरू तथा तेजबहादुर तथा K.N काट्जू जैसे वकीलों ने किया।

By - Khan Sir (खान सर)